कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी,
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा.

प्रयोगवाद : "व्यष्टि-चेतना"

(1) तार सप्तक के प्रकाशन (1943ई०) के साथ ही हिन्दी साहित्य में आधुनिक संवेदना और भावबोध का सूत्रपात हुआ। यह वह युग था जब बौद्धिक जगत में एक विश्व-व्यापी दुविधा का माहौल बना हुआ था। एक तरफ साम्यवाद का आकर्षण तो दूसरी तरफ पश्चिमी देशों में उपलब्ध स्वाधीनता इन्हीं दोनों विचारधाराओं से बची शंका, संदेह आदि से उबरने का उद्देश्य लेकर सात कवि अपने निजी व्यक्तित्व की तलाश में गतिशील दिखलाई पड़ते हैं।

प्रयोगवाद का प्रगतिवाद के साथ घनिष्ट संबंध है। प्रगतिवादी दौर में विचारधारा के प्रति प्रबल आग्रह ने लेखक के अन्दर अपने ही व्यक्तित्व को उपेक्षित पाया। प्रगतिवादी लेखक अपने 'स्वत्व' की उपेक्षा करके सामाजिक विषयों को अपने लेखन में स्थान देता है अज्ञेय आदि 'तार सप्तक' कवियों ने प्रगतिवाद की इस परम्परा के विरुद्ध नीजी व्यक्तित्व, निजी सत्य और निजता की आवाज उठाई।

यह द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। सहस्त्राब्दियों से विकसित मानवीय परम्परा खतरे में थी। मानव द्वारा ही विकसीत विज्ञान और तकनीक मानवीय सभ्यता के लिए खतरा बन गए। इस युग के दबाव में साहित्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी मानव जीवन की नए संदर्भों में व्याख

(2)

मानव की एक इकाई (व्यष्टि) का समाज के साथ संबंधों की पुनर्व्याख्या। इस उद्देश्य से साहित्य मात्र आत्म साक्षात्कार का माध्यम ही नहीं बल्कि आत्म साक्षात्कार की प्रक्रिया बन कर उभरा।

प्रयोगवाद का मूलाधार वैयक्तिकता है। उसमें बौद्धिकता का प्राधान्य है और औद्योगिक सभ्यता के तीव्र मशीनीकरण से स्वयं को बचाने की चिन्ता है प्रयोगवादी कवियों ने व्यष्टि और समष्टि के संबंध पर भी कई कविताएँ लिखी है। अज्ञेय जी की कविता "नदी के द्वीप" में ऐसा प्रयास सहज रूप से दिखाई पड़ता है।

"किन्तु हम है द्वीप
हम धारा नहीं है
स्थिर समर्पण है हमारा
हम सदा से द्वीप है स्रोतस्विनी के
किन्तु हम बहते नहीं है
क्योंकि बहना रेत होना है
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं"

इस प्रकार अज्ञेय जी कहते है कि महत्वपूर्ण है 'रहना' या 'होना'। धारा में बहकर इतिहास प्रवाह में घुलकर अपने निजीपन की रक्षा संभव नहीं।

Scanned with CamScanner